Asia Pacific Journal of Research in Business Management
Vol. 8, Issue 3, March2017 Impact Factor: 5.16,ISSN: (2229-4104)
www.skirec.org Email Id: skirec.org@gmail.com

उत्तर प्रदेश में कृषि की आर्थिक आधारित विकास की भौगोलिक संरचना

[1]गुरभाग सिंह, [2]डा. सुधीर कुमार शर्मा

अर्थशास्त्र विभाग

[1,2]श्री वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय,गजरौला, अमरोहा, उत्तर प्रदेश

सार

कृषि उत्पादन एक पूणरूप से जैविक क्रिया है। इसलिए इसकी उत्पादन सम्बन्धी सारी प्रक्रियाऐं कृषि पर्यावरणीय परिस्थितियों पर निर्भर करती है। उत्तर प्रदेश राज्य को चार कृषि जलवायु क्षेत्रों में बाँटा गया है – पश्चिमी, केन्द्रीय, दक्षिणी और पूर्वी। इनके आर्थिक क्षेत्रों में नाम से भी जाना जाता है और इनकी विभिन्न विशिष्टतायें है। यह शोध पत्र उत्तर प्रदेश के इन्हीं आर्थिक क्षेत्रों के कृषि परिस्थितीकीय विशिष्टताओं का वर्णन एवं तुलनात्मक की जा सकें।

उत्तर प्रदेश के आर्थिक क्षेत्र

उत्तर प्रदेश को परिस्थितीकीय स्थितियों में समानता फसलोत्पादन भूमि की उपयोगिता एवं संस्थागत एवं विकासात्मक ढाँवे में आपसी समानताओं के परिप्रेक्ष्य में चार परिक्षेत्रों में बाँटा गया है। सारिणी – 1 में जिलेवार क्षेत्रों पर आधारित प्रशासनिक विभाजन को प्रस्तुत किया गया है। पश्चिमी क्षेत्र में सहारनपुर, मुजफ्फरनगर, बिजनौर, मेरठा, मुरादाबाद, बुलन्दशहर, रामपुर, बरेली, पीलीभीति शाँहजहाँपुर, बदायुँ, अलीगढ़, मथुरा, इटावा, मैनपुरी, एटा फर्रूखाबाद, आगरा, गाजियाबाद और फिरोजाबाद जिलों में 82192 वर्ग कि.मी. के परिक्षेत्र शामिल है।

सारणी – 1 उत्तर प्रदेश के क्षेत्र

क्र.सं.	आर्थिक	कृषि आधारित	जनपद	भौगोलिक क्षेत्रफल (वर्ग कि.मी.)
	पश्चिमी	पश्चिमी	सहारनपुर, मुज्जफरनगर, बिजनौर, मेरठ, मुरादाबाद, बुलन्दशहर, रामपुर, बरेली, पिलीभीत, शाहजाँनपुर, बदायु, अलीगढ़, गाजियाबाद, मथुरा, एटा, मैनपुरी, फरूखाबाद, इटावा, फिरोजाबाद और आगरा।	82,192
	केन्द्रीय	केन्द्रीय	खीरी, सीतापुर, हरदोई, लखनऊ, बाराबंकी, रायबरेली, उन्नाव, फतेहपुर, कानपुर और कनपुर देहात	45,843
	पूर्वी	पूर्वी	बहराईच, गोण्डा, बस्ती, सिद्धार्थनगर, गोरखपुर, महाराजगंज, देवरिया, बलिया, आजमगढ़, मऊ, फैजाबाद, सुल्तानपुर, जौनपुर, गाजीपुर, वाराणसी, मिर्जापुर, सोनभद्र, इलाहाबाद, प्रतापगढ़	85,804
	दक्षिणी	बुन्देलखण्ड	बाँदा, हमीरपुर, जालौन, ललितपुर और झाँसी	29,417

दक्षिणी संभाग 24 10 से 26 25 और 78 10 E से 81 35 E के छोर पर स्थित है। इस परिक्षेत्र में बाँदा, हमीरपुर, जालौन ,झाँसी और ललितपुर समेत 29417 वर्ग कि. मी. के जनपद शामिल है। संख्या एवं अर्थ निदेशालय, उत्तर प्रदेश ने राज्य का वर्गीकरण राजस्व परिषद के परामर्श के आधार पर आर्थिक विशिष्टता को ध्यान में रखकर किया है। इस कार्य में भारतीय कृषि शोध संस्थान, नई दिल्ली से भी परामर्श किया गया जिसने दक्षिण संभाग को बुंदेलखण्ड का नाम दिया है।

जलवायु

यदि तराई के कुछ हिस्सों को छोड़ दिया जायें तो उत्तर प्रदेश में पश्चिमी, केन्द्रीय तथा पूर्वी संभागों के उत्तर पूर्वी के स्थित तराई के अतिरिक्त जलवायु की दृष्टि निश्चित रूप से स्वस्थ है। यहाँ पर निश्चित रूप से वर्ष में दो बार दबावों में परिवर्तन होता है। उत्तर पश्चिमी मानसून के समय, वायु पूर्व से पश्चिम की तरफ बहता है। दक्षिणी पश्चिमी मानसून प्रायः जून के अन्त में राज्य में प्रवेश करता है और इसी कारण से वर्षा होती है। जब पश्चिमी दबाव या विक्षाभ निर्मित होता है तो जाड़े के महीने में बारिश होती है।

खरीफ और रबी की दो मुख्य कृषि सम्बन्धी फसलों की ऋतुओं इन्हीं शुष्क एवं आर्द्र मानसून के बाद आती हे। उत्तरी – पूर्वी मानसून नचम्बर से जून के मध्य होता है, जबकि दक्षिणी – पूर्वी मानसून मध्य जून से अक्टूबर के मध्य होता है और इसमें मुख्य दृष्टि होती है। अतः तापमान और आर्द्रता को दृष्टिगत रखते हुए पूरे वर्ष को तीन ऋतुओं में बाँटा जा सकता है –

- शीत – ऋतु (नवम्बर से फरवरी)
- उष्ण – ऋतु (मार्च से मध्य जून)
- मानसून अवधि (मध्य जून ने अक्टूबर)

वर्षा

भारत में कृषि मानसून के परिप्रेक्ष में हुएँ का खेल मानी जाती है। ऐसा भारतीय कृषि के रॉयल कमीशन के द्वारा 1928 में कहा गया है। सिंचाई के ढाँचों के विकसित करने के बावजूद और स्वतन्त्रता के पूर्व तथा पश्चात विभिन्न पंचवर्षीय योजनाओं में अथक प्रयास करने के बाद भी हमारे देश की दो तिहाई भूमि केवल वर्षा के द्वारा सिंचित होती है। अतः इस वर्षा का पूरे कृषि भू – भाग में एक समान वितरण कृषि की दृष्टि से काफी महत्वपूर्ण है। इसीलिए उत्तर प्रदेश राज्य की वर्षा का वितरण सारणी – 2 में विभिन्न कृषि – आर्थिक संभाग के सन्दर्भ में प्रस्तुत है।

सारणी – 2 सामान्य वर्षा का वितरण (मि. मी./प्रतिशत)

क्षेत्र	जून से सितम्बर	अक्टूबर से दिसम्बर	जनवरी से फरवरी	मार्च से मई	वर्ष का सम्पूर्ण
पश्चिमी	709.58 (87.64)	36.22 (4.47)	72.68 (6.15)	32.21 (3.98)	850.69 (100.00)
केन्द्रीय	818.46 (88.13)	46.13 (4.97)	35.24 (3.79)	28.84 (3.11)	928.67 (100.00)
दक्षिणी	954.99 (87.78)	60.81 (5.59)	36.39 (3.31)	35.65 (3.28)	1087.84 (100.00)
पूर्वी	779.83 (90.26)	39.17 (4.53)	26.73 (3.09)	18.24 (2.11)	863.97 (100.00)

भूमि उपयोगिता

भूमि उपयोगिता विश्लेषण का उद्देश्य का उद्देश्य भूमि की प्रकृति तथा कृषि उपयोग पर केन्द्रित है। इसके अलावे, इसमें उत्पादन की सघनता पर्यावरण के महत्व और खेती योग्य भूमि के विस्तार की सम्भावना का भी उल्लेख होता है। सारणी – 3 में विभिन्न परिक्षेत्रों में भूमि के उपयोग का उल्लेख उत्तर प्रदेश के सन्दर्भ में किया गया है।

भूमि उपलब्धता के सांख्यिकीय आँकड़ों के अनुसार, पश्चिमी परिक्षेत्र में 34.01 प्रतिशत, केन्द्रीय परिक्षेत्र में 1853 प्रतिशत, दक्षिणी परिक्षेत्र में 12.12 प्रतिशत और पूर्वी परिक्षेत्र में 35.34 प्रतिशत उपयोगी भू – क्षेत्र उल्लेखित है। इससे प्रतीत होता है कि कृषि के प्राथमिक संसाधनों की दृष्टि से पूर्वी परिक्षेत्र की हिस्सेदारी सर्वोच्च है और दक्षिणी परिक्षेत्र न्यूनतम बिन्दु पर है। वन – क्षेत्र निश्चित रूप से परिक्षेत्र में पर्यावरण की प्रास्थति को दर्शाते है। उत्तर प्रदेश में मात्र 6.80 प्रतिशत वनीय क्षेत्र है, जो कि पर्यावरण संतुलन की दृष्टि से दयनीय है। कम से कम और अधिक भूमि को वनीकृत करने की आवश्यकता है।

सारणी – 3 भूमि की उपयोगिता(2015 – 16)

क्र.सं.	श्रेणी	पश्चिमी	केन्द्रीय	दक्षिणी	पूर्वी	उत्तर प्रदेश
1	प्रतिवेदित क्षेत्रफल	2035982 (100.00)	4596165 (100.00)	2961006 (100.00)	8577250 (100.00)	24170403 (100.00)
2	वन	385061 (4.79)	338292 (5.18)	243600 (8.23)	790070 (9.21)	1657023 (6.86)
3	ऊसर और खेती के अयोग्य भूमि	148974 (1.85)	108200 (2.35)	109728 (3.71)	139961 (1.63)	506863 (2.10)
4	खेती के अतिरिक्त अन्य उपयोग में आने वाली भूमि	884259 (11.00)	527073 (11.7)	248.139 (8.38)	1069832 (12.47)	2729303 (11.29)
5	कृष्य बेकार भूमि	109954 (1.37)	92202 (2.01)	116508 (3.93)	121210 (1.41)	439874 (1.82)
6	स्थायी चारागाह एवं चराई की भूमि	17493 (0.22)	25270 (0.55)	4956 (0.17)	16601 (0.19)	64320 (0.27)
7	अन्य वृक्षों आदि की भूमि झाड़ियों	55271 (0.69)	75446 (1.64)	31941 (1.08)	209964 (2.45)	372622 (1.54)
8	वर्तमान परती	243690 (3.03)	299096 (6.51)	182792 (1.08)	559033 (2.45)	1284611 (1.54)
9	अन्य परती	133576	166853	56706	185174	542309

		(1.66)	(3.63)	(1.92)	(2.16)	(2.24)
10	वास्तविक बोया गया क्षेत्रफल	6057707 (75.38)	3063733 (66.66)	1966636 (66.42)	5485405 (63.95)	16573478 (68.57)

सिंचाई के ढाँचा :–

उर्वरक एवं सिंचाई प्रतिसंवेदी प्रजातियों का उद्भवच और विकास हरितक्रान्ति के लिए जिम्मेदार है और इसी वजह से हरितक्रान्ति की शुरूआत हुई और इसी वजह से कृषक लगातार सिंचाई पर ही निर्भर करती है। ये इनके प्रमुख स्रोत है। कुछ अन्य स्रोत भी है – नहरें, तालाब और झील आदि ये काफी हद तक वर्षा से प्राप्त जल पर निर्भर रहते है। सूखे की स्थिति में इनकी उपयोगिता और अधिक बढ़ जाती है। जबकि अन्य स्रोत – ट्यूबवेल तो भूमिगत जल पर निर्भर रहते है। इसमें जल की उपलब्धता बिजली पर आश्रित है। विभिन्न क्षेत्रों की सिंचाई की प्रास्थिति इन्हीं घटकों पर निर्भर करती है। सारणी –4 स्रोतावार राज्य एवं आर्थिक संभागों की सिंचाई की प्रास्थिति को प्रदर्शित करता है। इससे यह पता चलता है कि उत्तर प्रदेश में वर्ष 2006 – 07 में सिंचित क्षेत्र 13313115 हेक्टेयर था। इसमें 78.7869.39 प्रतिशत भूमि ट्यूबवेल से सिंचाई होती है पश्चिमी परिक्षेत्र में 5569734 हेक्टेयर भूमि में सिंचाई होती है, इसमें 85.85 भूमि के लिए ट्यूबवेल लगे। केन्द्रीय परिक्षेत्र में 2534507 हेक्टेयर भूमि में सिंचाई की जाती है। इसमें 78.61 प्रतिशत भूमि की सिंचाई ट्यूबवेल द्वारा की जाती है। दक्षिणी परिक्षेत्र में, 1026217 हेक्टेयर भूमि सिंचित है। इसमें 47.25 प्रतिशत भूमि में नलकूप से सिंचित होती है।

सारणी –4 स्रोतों के अनुसार सिंचित क्षेत्रफल(हेक्टेयर)

क्षेत्र	नहर	नलकूप एवं अन्य कुआ	तालाब आदि	अन्य	शुद्ध सिंचित क्षेत्र
पश्चिमी	756989 (13.59)	4781796 (85.85)	2976 (0.06)	27973 (0.50)	5569734 (100.00)
केन्द्रीय	525736 (20.74)	1992385 (78.61)	13713 (0.54)	2673 (0.11)	2534507 (100.00)
दक्षिणी	445154 (43.38)	484933 (47.25)	74574 (7.27)	21556 (2.10)	1026217 (100.00)
पूर्वी	885786 (21.18)	3229474 (77.21)	57903 (1.38)	9530 (0.23)	4182693 (100.00)
उत्तर प्रदेश	2613665 (19.63)	10488588 (78.78)	149166 (1.12)	61732 (0.46)	13313151 (100.00)

उत्पादन की पद्धति :–

उत्पादन पद्धति से विभिन्न फसलों को प्रदत्त भिन्न सम्भागों के सापेक्षित महत्व या उपयोगिता का पता चलता है यह कृषि एवं जलवायु के प्रभाव का प्रतिफल है। मिसे प्राविधिक परिवर्तनों के पूर्व की स्थिति भी प्रभावित करती है। क्योंकि विभिन्न परिक्षेत्र में उत्पादकों के अलग पद्धतियों होती है। उत्तर प्रदेश को दो धान और गेहूँ केन्द्रित परिक्षेत्रों में बाँटा गया, विभिन्न परिक्षेत्रों में उत्पादन पद्धति इन्हीं दो मुख्य फसलों पर केन्द्रित होती है। कृषि में तकनीकी परिवर्तन के परिणाम स्वरूप, राज्य में गेहूँ ने सर्वाधिक प्रमुख स्थान प्राप्त कर लिया है। सारणी –5 प्रस्तुत करती है कि राज्य स्तर पर गेहूँ के अन्तर्गत क्षेत्र 36.95 प्रतिशत है।

Asia Pacific Journal of Research in Business Management
Vol. 8, Issue 3, March2017 Impact Factor: 5.16,ISSN: (2229-4104)
www.skirec.org Email Id: skirec.org@gmail.com

सारणी –5 फसलोत्पादल पद्धति

फसल	क्षेत्र				
	पश्चिमी	केन्द्रीय	दक्षिणी	पूर्वी	उत्तर प्रदेश
धान	1505623 (15.48)	1120222 (24.10)	74009 (3.03)	3136200 (36.50)	5836054 (22.96)
ज्वार	9528 (0.10)	92648 (1.99)	72510 (2.96)	55978 (0.65)	230664 (0.91)
बाजरा	739000 (7.60)	38452 (0.83)	25380 (1.04)	99599 (1.16)	902431 (3.55)
मक्का	344194 (3.54)	161280 (3.47)	35486 (1.45)	308960 (3.60)	849920 (3.34)
गेहूँ	3563287 (36.63)	1736525 (37.36)	692895 (28.33)	3396813 (39.53)	9389520 (36.95)
चना	21221 (0.22)	108708 (2.34)	427589 (17.48)	97190 (1.13)	654708 (2.58)
सकल बोया गया क्षेत्र	9727491 (100.0)	4647729 (100.0)	2445889 (100.0)	8593487 (100.0)	25414598 (100.0)

गेहूँ के अन्तर्गत क्षेत्र दक्षिणी परिक्षेत्र के 28.33 प्रतिशत एवं पूर्वी परिक्षेत्र के 39.55 प्रतिशत के मध्य है। 37. 84 प्रतिशत रहा। धान के अन्तर्गत 22.96 प्रतिशत क्षेत्र 23.71 प्रतिशत राज्य स्तर पर है। दक्षिणी परिक्षेत्र में धान प्रतिशत 3.03 प्रतिशत तथा पूर्वी परिक्षेत्र में इसका 36.50 प्रतिशत, पश्चिमी संभाग में 15.48 प्रतिशत तथा केन्द्रीय 24.10 प्रतिशत है। उरद, मूँग, अरहर एवं मसूर भी राज्य की प्रमुख फसलें कम क्षेत्र बाली फसलें है। उत्पादन की पद्धति के गहन अध्ययन से यह स्पष्ट है कि ये दलहन की फसलें परिक्षेत्रवार प्राथमिकता के आधार पर पैदा की जाती है। दक्षिणी परिक्षेत्र में मसूर सर्वाधिक महत्वपूर्ण फसल है। दक्षिणी परिक्षेत्र में चना, तथा केन्द्रीय परिक्षेत्र में मसूर सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। दक्षिणी परिक्षेत्र में चना, तथा केन्द्रीय परिक्षेत्र में भी चना की प्रमुखता है। राज्य स्तर पर चने की हिस्सेदारी 2.58 प्रतिशत है, जिसमें पश्चिमी परिक्षेत्र में 0.22 प्रतिशत दक्षिणी परिक्षेत्र में इसकी हिस्सेदारी 1.33 प्रतिशत है, जबकि पश्चिमी परिक्षेत्र में मात्र 0.23 प्रतिशत तथा पूर्वी परिक्षेत्र में मात्र 1.33 प्रतिशत है। राज्य स्तर पर मसूर की पैदावार 2.35 प्रतिशत हरा, जिसमें पश्चिमी परिक्षेत्र में मसूर की भागीदारी 0.65 प्रतिशत तथा दक्षिणी परिक्षेत्र में मात्र 10. 44 प्रतिशत रही। उरद का राज्य स्तर पर उत्पादन 1.06 प्रतिशत रहा, जिसमें पश्चिमी परिक्षेत्र में इसकी हिस्सेदारी 0.30 प्रतिशत तथा दक्षिणी परिक्षेत्र में इनका योगदान 5.25 प्रतिशत रहा। मूँग कका उत्तर प्रदेश स्तर पर क्षेत्रफल 0.10 प्रतिशत तक सीमित रहा, जिसमें पश्चिमी परिक्षेत्र में इसका क्षेत्रफल 0.02 प्रतिशत तथा पूर्वी परिक्षेत्र में मात्र 0.76 रहा। इस आधार पर यह कहा जा सकता है कि दक्षिणी परिक्षेत्र में उत्पादक दलहनों को काफी महत्व देते हैं।

कृषि का महत्व

ऐसे ढ़ेर सारे कारण है जो अप्रत्यक्ष रूप से कृषि विकास को प्रभावित करते है तथा फसलों के चयन में महत्वपूर्ण और इसी कारण उत्पादन के परिप्रेक्ष्य में प्राथमिकताऐं बदल जाया करती है। यदि कृषि सम्बन्धी

Asia Pacific Journal of Research in Business Management
Vol. 8, Issue 3, March2017 Impact Factor: 5.16,ISSN: (2229-4104)
www.skirec.org Email Id: skirec.org@gmail.com

ढाँचे का परिक्षण तथा तुलना के दृष्टि से देखा जाय तो इसके पाँच संघटक निम्न है – विद्युत का उपभाग, पक्की लड़क की लम्बाई, बैंक शाखायें, शीत गृह तथा कृषि विपणन केन्द्र। इनको क्रमानुसार चिन्हित किया गया है तथा संयोजी सूचकांक निर्मित किया गया है।

सारणी –6 अवस्थापना की स्थिति

विवरण	पश्चिमी	केन्द्रीय	दक्षिणी	पूर्वी	उत्तर प्रदेश
प्रति व्यक्ति बिजली का उपभोग (किलोवाट घण्टा) (2008 – 09)	292.6	202.8	182.7	128.9	205.4
प्रति हजार किलोमीटर पर पक्की सड़क (2007 – 08)	883.98	808.40	372.97	853.45	796.32
प्रति लाख जनसंख्या पर बैंक शाखाओं की संख्या (2008 – 09)	5.3	5.7	5.2	4.3	5.0
प्रति लाख हेक्टेयर बोये गये क्षेत्र में विपणन केन्द्रों की संख्या (2008 – 09)	0.22	0.17	0.21	0.12	0.17

सारणी –6 से स्पष्ट है कि पश्चिम पश्चिम परिक्षेत्र का सूचकांक 133.69 प्रतिशत है और इसका ढाँचागत आधार पूरे राज्य में सर्वोत्तम है, जबकि दक्षिणी परिक्षेत्र में सूचकांक काफी दयनयी 68.11 प्रतिशत रहा। इन कृषि आर्थिक परिक्षेत्रों के मध्य, पश्चिमी परिक्षेत्र ही केवल ऐसा क्षेत्र है, जहाँ 100 से अधिक सूचकांक है। पुश्तायुक्त सड़क के दृष्टिकोण से देखा जायें तो पश्चिमी परिक्षेत्र का सूचकांक 113.28 प्रतिशत है। यहाँ सड़क परिवहन की स्थिति तुलनात्मक रूप से अच्छी है। दक्षिणी परिक्षेत्र का सूचकांक 72.21 प्रतिशत है, जो कि न्यूनतम है। बैंकों की संख्या के दृष्टिकोण से अवलोकन किया जाये तो केन्द्रीय परिक्षेत्र अत्यन्त विकसित है, इनका सूचकांक 106.90 प्रतिशत है, जबकि पूर्वी परिक्षेत्र का सूचकांक न्यूनतम है। शीतग्रहों की संख्या की दृष्टि से देखा जाये तो पश्चिमी परिक्षेत्र का सर्वोच्च सूचकांक 212.55 प्रतिशत है, जबकि दक्षिणी परिक्षेत्र में न्यनतक सूचकांक मात्र 667 प्रतिशत है। कृषि विपणन केन्द्र की संख्या पश्चिमी परिक्षेत्र में सर्वाधिक है। इसका सूचकांक 117.65 प्रतिशत है, जबकि पूर्वी परिक्षेत्र काफी पिछडा है और यहाँ पर सूचकांक 74.12 प्रतिशत है।

सारणी –7 प्रतिशुद्ध बोये गये क्षेत्र में उत्पादन का सकल मूल्य (रूपये)

क्षेत्र/राज्य	प्रति हेक्टेयर शुद्ध बोये गये क्षेत्र में उत्पादन का सकल मूल्य (रू० में)
पश्चिमी	71296
केन्द्रीय	62177
पूर्वी	42467
दक्षिणी	24608
उत्तर प्रदेश	52680

Asia Pacific Journal of Research in Business Management
Vol. 8, Issue 3, March2017 Impact Factor: 5.16,ISSN: (2229-4104)
www.skirec.org Email Id: skirec.org@gmail.com

विभिन्न संभागों में कृषि – विकास :–

कृषि में विकास का अनुमापन संकेतकों के आधार पर किया जाता है, जो क्षैतिज तथा उर्ध्य विकास के संवाहक होते है। किन्तु सभी एक बिन्दु पर सहमत है कि प्रति हेक्टेयर सकल उत्पाद कर मूल्य विकास के लिए उपर्युक्त मापन है। सारणी 7 शुद्ध बोये क्षेत्र पर प्रति हेक्टेयर सकल उत्पाद को प्रस्तुत करता है और यह उत्तर प्रदेश तथा इनके विभिन्न कृषि – आर्थिक परिक्षेत्रों से सम्बन्धित है।

सारणी के यह पूर्णतया स्पष्ट है कि उत्तर प्रदेश का प्रति हेक्टेयर सकल उत्पाद का औसत मूल्य 52680 रू०/हेक्टेयर है। यहाँ दो ऐसे परिक्षेत्र का सकल का मूल्य रू० 71296 प्रति हेक्टेयर तथा उत्पाद केन्द्रीय परिक्षेत्र सकल मूल्य उत्पाद 62177 रू०/हेक्टेयर है। दक्षिणी परिक्षेत्र का सकल उत्पाद मूल्य न्यूनतम 24608 प्रति हेक्टेयर है।

प्रति हेक्टेयर के सकल उत्पाद मूल्य के अतिरिक्त अन्य भी मानक है। यथा प्रति टैक्टर सकल कृषि क्षेत्र, फसलों की सघनता, उर्वरक अनुपयोग की दर तथा नलकूप से सिंचित क्षेत्र का प्रतिशत। इन घाटकों का निश्चित रूप से कृषि उत्पादन पर स्पष्ट प्रभाव पड़ता है क्योंकि विभिन्न शोधों, परिशोधों के फलस्वरूप इनकों कृषि विकास के मानकों के रूप में देखा जाने लगा है। प्रति ट्रैकटर सकल कृषि क्षेत्र कृषि के आधूनिकीकरण को रेखांकित करता है। सारणी –8 से स्पष्ट है कि पश्चिमी परिक्षेत्र में यंत्रीकरण की उच्च सघनता 21.57 हेक्टेयर प्रति ट्रैक्टर है, तथा पूर्वी परिक्षेत्र में निम्न सघनाक है मात्र 39.47 प्रति हेक्टेयर, प्रति ट्रैकटर उत्तर प्रदेश में प्रति ट्रैकटर क्षेत्र 28.94 हेक्टेयर है।

सारणी –8 कृषि विकास के संकेतांक

विवरण	क्षेत्र				
	पश्चिमी	केन्द्रीय	दक्षिणी	पूर्वी	उत्तर प्रदेश
प्रति हेक्टेयर सकल बोया गया क्षेत्र	21.57	32.02	39.25	39.47	28.94
उर्वरक प्रयोग की दर (कि. मी. प्रति हेक्टेयर)	170.6	150.67	44.04	149.70	148.34
फसल संघनता	161.61	153.56	126.62	155.64	154.23
नलकूप से सिंचित प्रतिशत क्षेत्र	78.94	65.03	24.66	58.87	63.29

उपसंहार

इस शोध पत्र में उत्तर प्रदेश की कृषि – आर्थिकी की विभिन्न परिक्षेत्रों के संदर्भ में एक तुलना करने लेने की कोशिश की गई इस क्रम में रोक सस्यों की फसलों पर प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष प्रभाव डालने वाले कारकों या संदर्भिक विषयों के विश्लेषण की कोशिश की गई इसके अलावा जनांकिकीय या भूमि का वितरण विशेषता आदि द्वितीयक कारकों या कारणों को भी विचारणी बिन्दु माना गया है। इसके अतिरिक्त अनेक कारण प्रभावित करने वाले है।

Asia Pacific Journal of Research in Business Management
Vol. 8, Issue 3, March2017 Impact Factor: 5.16,ISSN: (2229-4104)
www.skirec.org Email Id: skirec.org@gmail.com

सन्दर्भ ग्रन्थ सूचि

- Goverment of India Playing Commission 11th Five Year Plan assuring Rural and urban Livelihoods Page 104 2006
- भारत सरकार योजना आयेग, 11वीं पंचवर्षीय योजना 2007 पृ. क्र 122
- **Md. Rais Uddin Mian at All** Impact of diary farming on livelihood of participating women under Grameen Bank in selected Area of Rangpur District in Bangladesh, Indian Journal of Economics Vol. 62, No. 2, 1990, April - June (2007) Page No. 259 - 271
- **S. Rangnathan.,** Indian Sugar Industry update LKP Research (internet Download)
- **सारस्वत सात्यमान,** ग्रामीण महिलाओं का स्वरोजगार, रेशम उद्योग, कुरूक्षेत्र मार्च 2008 पेज नं – 13
- एन. सन्याल आदि भारतीय चीनी उद्योग संभावनायें और मुछ्दे योजना अप्रैल 2008 पेज 11
- डॉ. उमेंश अग्रवाल, ग्रामीण रोजगार में हस्तशिल्प उद्योगों का योगदान, वर्ष 54 अंक 4 फरवरी 2008 पूज नं 13
- डॉ. नरंन्द्र त्रिपाठी उत्तर प्रदेश में उेयरी उद्योग का अवलोकरन वर्ष 55 अंक 1 कुरूक्षेत्र नबम्बर 2008 पूज नं 10